दुआए नुदबा (रोना / विलाप करना / गिड़गिड़ाना)

गिड़गिड़ाहट के साथ सूरज उगने के बाद पढ़ी जाने वाली दुआ - जुमा के दिन या ख़ास मौकों पर

रावी कहते हैं की सय्यद इब्ने ता'उस (र:अ) ने मिस्बाह अल-ज़ायेर में अमाल सरदाब के बारे में एक फसल रक़म की है जिसमें इन्हों हज़रत साहेबुज़'ज़मान (अ:त:फ़) की छह ज़्यारतें दर्ज की है, और फ़रमाया है की इसी फसल से दुआए नुदबा जोड़ी जाती है और रोज़ाना नमाज़े फ़ज्र के बाद हज़रत (अ:स) के लिये पढ़ी जाने वाली यह ज़्यारत सातवीं ज़्यारत गिनी जायेगी, और दुसरे दुआए अहद भी इस फ़सल में शामिल की जा रही है, जिसे ग़ैबते इमाम (अ:स) में पढ़ने का हुक्म हुआ है और वो दुआ भी ज़िक्र हुई है जो हज़रत (अ:स) के हरम-ए-शरीफ़ से वापस जाते वक़्त पढ़ना चाहिए, इसके बाद इन्होंने यह चारों चीज़ें वहाँ ब्यान की हैं! इसी कारणवश हम इनकी पैरवी करते हुए इस जगह पर वोही चार उमूर नक़ल कर रहे हैं, इनमें से पहले दुआए नुदबा है जिसे चार चार ईदों यानी ईद-उल-फितर, ईद-उल-अज़्हा, ईदे ग़दीर, और रोज़े जुमा पढ़ना मुस्तहब है, और वो दुआ इस प्रकार है :

अनुवाद पढ़ें

अल्लाहूम्मा सल्ले अला मोहम्मदीन व आले मोहम्मद.

हमद है ख़ुदा के लिये जो जहानों का परवरदिगार है और ख़ुदा हमारे सरदार और अपने नबी मुहम्मद (स:अ:व:व) और इनकी आल (अ:स) पर रहमत करे और बहुत बहुत सलाम भेजे! ऐ माबूद हमद है तेरे लिये के जारी होगी तेरी क़ज़ा व क़द्र तेरे औलिया के बारे में जिन क़ो तुने अपने लिये और अपने दीन के लिये ख़ास किया, जब के इन्हें अपने यहाँ से वो नेमतें अता की हैं जो बाक़ी रहने वाली हैं, जो न खत्म होती हैं न कमज़ोर पड़ती हैं, इसके बाद के तुने इनपर इस दुन्या के ब हक़ीक़त मुनासिब झूटी शानो-शौकत और ज़ीनत से दूर रहना लाज़िम किया, बस इन्होने यह शर्त पूरी की, और इनकी वफ़ा क़ो तू

जानता है, तुने इन्हें क़बूल किया, मुक़र्रिब बनाया, इनके ज़िक्र को बुलंद फ़रमाया, और इनकी तारीफें ज़ाहिर की, तुने इनकी तरफ़ अपने फ़रिश्ते भेजे, इनको वही से मुशर्रफ़ किया, इनको अपने उलूम से नवाज़ा, और इनको वो ज़रिया क़रार दिया जो तुझ तक पहुंचाए और वो वसीला जो तेरी खुशनूदी तक ले जाए, बस इनमे किसी को जन्नत में रखा, यहाँ तक की इस से बाहर भेजा, किसी को अपनी किश्ती में सवार किया और बचा लिया और जो इनके साथ थे इन्हें मौत से बचाया, तुने अपनी रहमत के साथ, और किसी को तुने अपना ख़लील बनाया फिर दुसरे सच्चे ज़बान वालों ने तुझ से सवाल किया जिसे तुने पूरा फ़रमाया, इसे बुलंद व बाला क़रार दिया, किसी के सतह तुने दरख़्त के ज़रिये कलाम किया और इसके भाई को इसका मददगार बनाया, किसी को तुने बिन बाप के पैदा फ़रमाया, इसे बहुत से मो'अज्ज़ात दिए और रूहे क़ुद्स से इसे क़ुव्वत दी, तुने इनमे से हर एक के लिये एक शरियत और रास्ता मुक़र्रर किया, इनके लिये औसिया चुने के तेरे दीन को क़ायेम रखने के लिये एक के बाद दूसरा निगहबान आया जो तेरे बन्दों पर हुज्जत क़रार पाया, ताकि हक़ अपने मुक़ाम से न हते, और बातिल के हामी अहले हक़ पर ग़लबा न पाएं और कोई यह न कहे की काश तुने हमारी तरफ़ डराने वाला रसूल भेजा होता और हमारे लिये हिदायत का झंडा बुलंद किया होता, ताकि तेरे आयतों की पैरवी करते इससे पहले के ज़लील व रुसवा हों, यहाँ तक की तुने अमरे हिदायत अपने हबीब और पाकीज़ा अस्ल मुहम्मद (स:अ:व:व) के सुपुर्द किया, बस वो ऐसे सरदार हुए जिनको तुने मख्लूक़ में से पसंद किया, बर्गुज़ेदों में से बर्गुज़ीदा बनाया, जिन को चुना इनमे से अफज़ल बनाया, अपने ख़ास में से बुज़ुर्ग क़रार दिया, इन्हें नबियों के पेशवा बनाया, और इनको अपने बन्दों में से जिन्नों-ईन्स की तरफ़ भेजा, इनके लिये सारे मशरिको मगरिबों को ज़ेर कर दिया, बुर्राक़ को इनका मती'अ बनाया, और इनको जिस्मो जान के साथ आसमान पर बुलाया और तुने इन्हें साबका व आईन्दा बातों का ईल्म दिया, यहाँ तक की तेरी मल्ह्लूक ख़त्म हो जाए, फिर इनको दबदबा अता किया और इनके गिर्द जिब्र'इल (अ:स) मीका'ईल (अ:स) और निशान ज़दः फ़रिश्तों को जमा फ़रमाया, इनसे वादा किया की आपका दीन तमाम अदयान पर ग़ालिब आयेगा, अगर्चेह मशरिक दिल'तंग हों और यह इस वक़्त हुआ जब हिजरत के बाद तुने इनके ख़ानदान को सच्चाई के मुक़ाम पर जगह दी और इनके और इनके साथियों के लिये क़िबला बनाया, पहला घर जो मका में बनाया गया, जो जहानों के लिये बरकत-ओ-हिदायत का मरकज़ है, इसमें वाज़े निशानियाँ और मुक़ामे इब्राहीम (अ:स) है, जो इस घर में दाख़िल हुआ इसे अमान मिल गयी, और तुने फ़रमाया ज़रूर ख़ुदा ने इरादा कर लिया है की तुमसे बुराई को दूर कर दे ऐ अहलेबैत (अ:स) और तुम्हें पाक रखे जिस तरह पाक रखने का हक़ है, मुहम्मद (स:अ:व:व) और इनकी आल (स:अ) पर तेरी रहमतें हों, तुने क़ुरान में अहलेबैत (अ:स) की मुहब्बत को इनका अजरे रिसालत क़रार दिया, बस तुने फ़रमाया कह दें की मै तुमसे अजरे रिसालत

नहीं माँगता, मगर यह की मेरे अक़रबा से मुहब्बत करो और तुने कहा जो अजर मै ने तुम से माँगा है वो तुम्हारे फ़ायेदे में है, बस तुने फ़रमाया मैने तुमसे अजरे रिसालत नहीं माँगा सिवाए इसके की यह राह इसके लिये जो ख़ुदा तक पहुंचना चाहे, बस अहलेबैत तेरा मुक़र्रर किया हुआ रास्ता और तेरी खुशनूदी के हुसूल का ज़रिया हैं, हाँ जब मुहम्मद रसूल-अल्लाह (स:अ:व:व) का वक़्त पूरा हो गया तो इनकी जगह अली (अ:स) बिन अबी तालिब (अ:स) ने ले लिये. इन दोनों पर और इनकी आल (अ:स) पर तेरी रहमतें हों, अली (अ:स) रहबर हैं, जबकि मुहम्मद डराने वाले और हर कौम के लिये रहबर है, बस फ़रमाया, आप ने जमा'अत-ए-सहाबा से के जिसका मै (स:अ:व:व) मौला हूँ बस अली (अस:) भी इसके मौला हैं, ऐ माबूद मुहब्बत कर इस से जो इससे मुहब्बत करे, दुश्मनी कर इस से जो इससे दुश्मनी करे, मदद कर इसकी जो इसकी मदद करे, ख़्वार कर इसको जो इसको छोड़े, इसके बाद फ़रमाया की जिसका मै नबी (स:अ:व:व) हूँ अली (अ:स) उसका अमीर व हाकिम है और फ़रमाया मै (स:अ:व:व) और अली (अ:स) एक दरख़्त से हैं और दुसरे लोग मुखतलिफ़ दरख्तों से पैदा हुए हैं, और अली (अ:स) क़ो अपना जा'नशीन बनाया जैसे हारून (अ:स) मूसा (अ:स) के जा'नशीन हुए और फ़रमाया "ऐ अली (अ:स) यूं मेरे नज़दीक वोही मुक़ाम रखते हो जो हारून (अ:स) क़ो मूसा (अ:स) की निस्बत था, मगर मेरे बाद कोई नबी नहीं, आप ने अली (अ:स) के निकाह अपनी बेटी सरदारे ज़िनान-ए-आलम (स:अ) से मस्जिद में किया, इनके लिये वो अम्र हलाल रखा जो आप के लिये था और मस्जिद की तरफ़ से सभी दरवाज़े बंद कराये सिवाए अली (अ:स) के दरवाज़े के, फिर अपना ईल्म-ओ-हिकमत इनके सुपुर्द किया और फ़रमाया मै ईल्म का शहर हूँ और अली (अ:स) इस के दरवाज़े हैं, लिहाज़ा जो ईल्म -व हिकमत का तालिब है वो इसे दरे ईल्म पर आये उसके बाद यह कहा की ऐ अली (अ:स) तुम मेरे भाई जा'नशीन और वारिस हो, तुम्हारा गोश्त मेरा गोस्त, तुम्हारा ख़ून मेरा ख़ून तुम्हरी सुलह मेरी सुलह, तुम्हारी जंग मेरी जंग है और ईमान तुम्हारी रगों में शामिल है जैसे वो मेरी रगों में शामिल है, क़यामत में तुम हौज़े कौसर पर मेरे ख़लीफ़ा होगे, तुम्ही मेरे क़र्ज़े चुकाओगे और मेरे वादे निभाओगे, तुम्हारे शिया जन्नत में चमकते चेहरों के साथ नूरानी तख्तों पर मेरे आस पास मेरे क़रीब होंगे और ऐ अली (अ:स) अगर तुम न होते तो मेरे बाद मोमिनों की पहचान न हो पाती चुनान्चेह वो आप के बाद गुमराही से हिदायत में लाने वाले तारीकी से रौशनी में लाने वाले ख़ुदा का मज़बूत सिलसिला और इसका सीधा रास्ता हैं न क़राबत-ए-पैग़म्बर में कोई इनसे बढ़ा हुआ था न दीन में कोई इनसे आगे था इनके अलावा कोई भी औसाफ़ में रसूल के मानिंद न था, अली (अ:स) व नबी (स:अ:व:व) और इनकी आल (अ:स) पर ख़ुदा की रहमत हो, अली (अ:स) ने तावीले क़ुरान पर इनकी जंग की और ख़ुदा के मामले में किसी मुलामात करने वाले की मुलामात की परवाह न की, अरब सरदारों क़ो हालाक किया, इनके बहादुरों क़ो क़त्ल किया और इनके

पहलवानों क़ो पछाड़ा, बस अरबों के दिलों में कीना भर गया के बदर, खैबर, हुनैन वगैरा में इनके लोग क़त्ल हो गए, बस वो अली (अ:स) की दुश्मनी में इकट्ठे हुए और इनकी मुखाल्फ़त पर आमादा हो गए चुनान्चेह आप (अ:स) ने बैय्यत तोड़ने वालों तफ्रका डालने वालों और हटधर्मी करने वालों क़ो क़त्ल किया, जब आपका वक़्त पूरा हुआ तो बाद वालों में से बद'बख्त तरीन ने आपको क़त्ल किया इसने पहले वाले शक़ी तरीन की पैरवी की रसूल-अल्लाह (स:अ:व:व) का फ़रमान पूरा न हुआ जबकि एक रहबर के बाद दूसरा रहबर आता रहा और उम्मत इस की दुश्मनी पर शिद्द्त से कमर्बस्ता होकर इस पर ज़ुल्म ढाती रही और इस की औलाद क़ो परेशान करती रही, मगर थोड़े से लोग वफादार थे और इनका हक़ पहचानते थे, बस इनमें से कुछ क़त्ल हो गए कुछ क़ैद में डाले गए और कुछ बे-वतन हुए ईन पर क़ज़ा (मौत) वारिद (नाज़िल) हो गयी जिस पर वो बेहतरीन अजर के उम्मीदवार हुए क्योंकि ज़मीन ख़ुदा की मिलकियत है, वो अपने बन्दों में से जिसे चाहे इसका वारिस बनाता है और अंजाम कार परहेज़गारों के लिये है और पाक है हमारा रब की हमारे रब का वादा पूरा होकर रहता है, हाँ ख़ुदा अपने वादे के ख़िलाफ नहीं करता और वो ज़बरदस्त हिकमत वाला है, बस हज़रत मुहम्मद (स:अ:व:व) और हज़रत अली (अ:स) ईन दोनों पर ख़ुदा की रहमत हो इनके ख़ानदान पर इनपर रोने वालों क़ो रोना चाहिए चुनान्चेह ईन पर और ईन जैसों पर दहाड़ें मार कर रोना चाहिए बस इनके लिये आंसू बहाए जाएँ, रोने वाले चीख़ चीख़ कर रोयें नालह व फ़रयाद बुलंद करें और ऊंची आवाजों में रोकर कहें कहाँ हैं हसन (अ:स) कहाँ हैं हुसैन (अ:स), कहाँ गए फर्ज़न्दाने हुसैन (अ:स) एक नेक किरदार के बाद दूसरा नेक किरदार, एक सच्चे के बाद दूसरा सच्चा, कहाँ गए जो एक के बाद एक राहे हक़ के रहबर थे, कहाँ गए जो अपने वक़्त में ख़ुदा के बर्गुज़ीदा थे, कहाँ गए वो चमकते सूरज, कहाँ गए वो दमकते चाँद, कहाँ गए वो झिलमिलाते सितारे, कहाँ गए वो दीन के निशान और ईल्म के सतून, कहाँ है ख़ुदा का आखरी नुमाइंदा जो रहबरों के इस ख़ानदान से बाहर नहीं, कहाँ है वो जो जालिमों की जड़ें काटने के लिये आमादा है, कहाँ है वो जो इंतज़ार में है, के टेढ़े क़ो सीधा और ग़लत तो दुरुस्त करे, कहाँ है वो उम्मिदगाह जो ज़ुल्मो सितम क़ो मिटाने वाला है, कहाँ है वो जो फरायेज़ और सुनन क़ो ज़िंदा करने वाला इमाम (अ:स) कहाँ है वो जो मिल्लत और शरियत क़ो रास्त करना वाला, कहाँ है वो जिसके ज़रिये क़ुरान और इसके अहकाम के ज़िंदा होने की तवक्का है कहाँ है वो जो दीन और अहले दीन के तरीक़े रौशन करने वाला, कहाँ है वो जो जालिमों का ज़ोर तोड़ने वाला कहाँ है वो जो शरीक और निफाक की बुन्याद ढाने वाला, कहाँ है वो जो बकारों, ना'फरमानों और सरकशों क़ो तबाह करने वाला, कहाँ है वो जो गुमराही और तफ़रक़े की शाखें काटने वाला, कहाँ है वो जो कज'दिली व नफ्स'परस्ती के दाग़ मिटाने वाला, कहाँ है वो जो झूट और बोहतान की रगें काटने वाला, कहाँ है वो जो सरकशों और मगरूरों क़ो तबाह करने वाला कहाँ है वो जो दुश्मनों

क़ो ज़लील करने वाला, कहाँ है वो जो सब क़ो तक़वा पर जमा करने वाला, कहाँ है वो जो ज़मीन व आसमान के पैवस्त रहने का वसीला, कहाँ है वो जो यौमे फतह का हुक्मरान और हिदायत का परचम लहराने वाला, कहाँ है वो जो नेकी और खुशनूदी का लिबास पहनने वाला, कहाँ है वो जो जो नबियों के ख़ून और नबियों के औलाद के ख़ून का दावेदार, कहाँ है वो जो कर्बला के मक़तूल हुसैन (अ:स) के ख़ून का मुद्दई, कहाँ है वो जो इस पर ग़ालिब है जिस ने ज्यादती की और झूट बाँधा और वो परेशान की जब दुआ मांगे तो क़बूल होती है, कहाँ है वो जो मख्लूक़ का हाकिम जो नेक और परहेजगार है, कहाँ है वो जो नबी मुस्तफा (स:अ:व:व) का फ़र्ज़न्द अली मुर्तज़ा (अ:स) का फ़र्ज़न्द ख़दीजा पाक (स:अ)क अफार्जंद और फ़ातिमा कुबरा (स:अ) का फ़र्ज़न्द मेहदी (अ:स०, कुर्बान आप पर मेरे माँ बाप और मेरी जान आप के लिये फ़िदा है, ऐ ख़ुदा के मुक़र्रिब सरदारों के फ़र्ज़न्द, ऐ पाक नसल बुजुर्गवारों के फ़र्ज़न्द, ऐ हिदायत याफ़ता रहबरों के फ़र्ज़न्द, ऐ बुर्गाजीदा और ख़ुश'इतवार बुज़ुर्गों के फ़र्ज़न्द, ऐ पाक नेहा सरदारों के फ़र्ज़न्द, ऐ पाकबाजों पाक हुए लोगों के फ़र्ज़न्द,ऐ पाक निषाद सादात के फ़र्ज़न्द, ऐ वासी-उल-क़ल्ब इज्ज़त्दारों के फ़र्ज़न्द, ऐ रौशन चांदों के फ़र्ज़न्द, ऐ रौशन चिरागों के फ़र्ज़न्द, ऐ रौशन सय्यारों के फ़र्ज़न्द,ऐ चमकते सितारों के फ़र्ज़न्द,ऐ रौशन राहों के फ़र्ज़न्द,ऐ बुलंद मर्तबा वालों के फ़र्ज़न्द,ऐ हामेलीन-ए-उलूम के फ़र्ज़न्द, ऐ वाज़े'अ रविशों के फ़र्ज़न्द,ऐ मजकूर अलामतों के फ़र्ज़न्द, ऐ मोजिज़ नुमाओं के फ़र्ज़न्द,ऐ ज़ाहिर दलाएल के फ़र्ज़न्द,ऐ सीधे रास्ते के फ़र्ज़न्द,ऐ अज़ीम ख़बर के फ़र्ज़न्द,ऐ रौशन सय्यारों के फ़र्ज़न्द,ऐ इस हस्ते के फ़र्ज़न्द जो ख़ुदा के यहाँ उम्मुल-किताब में अली और हकीम है, ऐ वाज़े'अ रौशन आयात के फ़र्ज़न्द,ऐ ज़ाहिर और दलायेल के फ़र्ज़न्द,ऐ वाज़े'अ व रौशनतर दल्लायेल के फ़र्ज़न्द,ऐ कामिल हुज्जतों के फ़र्ज़न्द,ऐ बेहतरीन नेमतों के फ़र्ज़न्द,ऐ ताहा और मोहकम आयतों के फ़र्ज़न्द,ऐ यासीन व ज़ारियात के फ़र्ज़न्द,ऐ टूर और आदियात के फ़र्ज़न्द,ऐ इस हस्ती के फ़र्ज़न्द जो नज़दीक हुए तो इससे मिल गए बस कमान के दोनों सिरों जितने या इस से भी नज़दीक हुए अली'आला के क़रीब हो गए, ऐ काश मै जानता की इस दूरी ने आपको कहाँ जा ठहराया और किस ज़मीन में और किस ख़ाक़ ने आपको उठा रखा है, आप मुक़ाम रिज़वा में है या किसी और पहाड़ पर हैं या वादिये तू'आ में यह मुझ पर गिरां है के मै मख्लूक़ क़ो देखूं और आपको न देख पाऊँ, न आपकी आहात सुनूं न आपकी सरगोशी, मुझे रंज है के आप तन्हा सख्ती में पड़े हैं, मै आप के साथ नहीं हूँ की मेरी आहो ज़ारी आप तक पहुँच पाती,मेरी जान आप पर कुर्बान के आप गायेब हैं मगर हम से दूर नहीं, मै आप पर कुर्बान आप वतन से दूर हैं लेकिन हम से दूर नहीं, मै आप पर कुर्बान के आप हर मोहिब की आरज़ू और हर मोमिन और मोमिना की तमन्ना हैं जिस के लिये वो नाला करते हैं, मै कुर्बान के आप वो इज्ज़तदार हैं जिनका कोई सानी नहीं, मै कुर्बान के आप वो बुलंद मर्तबा हैं जिन के बराबर कोई नहीं, मै कुर्बान के आप वो

क़दीमी नेमत हैं की जिस की कोई मिसाल नहीं, मै कुर्बान के आप जो शरफ़ रखते हैं वो किसी और क़ो नहीं मिल सकता कब तक हम आप के लिये बेचैन रहेंगे ऐ मेरे आक़ा और कण तक और किस तरह आप से ख़िताब करूँ और सरगोशी करूँ, यह मुझ पर गिरां है के सिवाए आपके किसी से जवाब पाऊँ या बातें सुनूं, मुझ पर गिरां है की मै आप के लिये रोऊँ और लोग आप क़ो छोड़ रहे हैं, मुझ पर गिरां है के लोगों की तरफ़ से आप पर गुज़रे जो गुज़रे तो क्या कोई साथी है जिसके साथ मिलकर आप के लिये गिरया व ज़ारी करूँ, क्या कोई बेताब है की जब वो तनहा हो तो इस के हमराह नाला करूँ या कोई आँख है जिसके साथ मिलकर मेरी आँख ग़म के आंसू बहाए , ऐ अह्मदे मुजतबा (स:अ:व:व) के फ़र्ज़न्द आप के पास आने का कोई रास्ता है, क्या हमारा आज का दिन आप के कल से मिल जाएगा की हम ख़ुश हों कब वो वक़्त आयेगा की हम आप्नके चश्मे से सैराब होंगे, कब हम आपके चश्मा-ए-शिरीन से प्यास बुझाएंगे अब तो प्यास तूलानी हो गयी कब हमारी सुबह व शाम आपके साथ गुज़रेगी की हमारी आंकें ठंडी होंगी, कब आप, मै और हम आपपको देखेंगे जबकि आपकी फ़तह का परचम लहराता होगा, हम आपके इर्द-गिर्द जमा होंगे और आप भी लोगों के इमाम होंगे तब ज़मीन आपके अदल व इंसाफ़ से पर होगी आप अपने दुश्मनों क़ो सख्ती व ज़िल्लत से हमकिनार करेंगे, आप सरकशों और हक़ के मुन्किरों क़ो नाबूद करेंगे, मगरूरों का ज़ोर तोड़ देंगे और ज़ुल्म करने वालों की जड़ें काट देंगे इस वक़्त हम कहेंगे हम्द है ख़ुदा के लिये जो जहानों का रब है, ऐ माबूद तू दुखों और मुसीबतों क़ो दूर करने वाला है मै तेरे हुज़ूर शिकायत लाया हूँ के तू मदावा करता है और तू ही दुन्या व आख़ेरत का परवरदिगार है, बस मेरी फ़रयाद सुन ऐ फरयादियों की फ़रयाद सुनने वाले अपने इस हकीर और दुखी बन्दे क़ो इस आक़ा का दीदार करा दे ऐ ज़बरदस्त क़ुव्वत वाले इनके वास्ते से इसके रंज व ग़म क़ो दूर फ़रमा और इसकी प्यास बुझा दे ऐ वो ज़ात के जो अर्श पर हावी है की जिस की तरफ़ वापसी और आखरी ठिकाना है और ऐ माबूद हम है हैं हकीर बन्दे जो तेरे वली-ए-असर (अ:स) के मुश्ताक हैं जिनका ज़िक्र तुने और तेरे नबी ने किया, तुने इन्हें हमारी जाए पनाह बनाया हमारा सहारा क़रार दिया इनको हमारी ज़िन्दगी का ज़रिया और पनाहगाह बनाया और इनको हम में से मोमिनों का इमाम क़रार दिया बस इनको हमारा दरूद व सलाम पहुंचा और ऐ परवरदिगार इनके ज़रिये हमारी इज़्ज़त में इज़ाफा फ़रमा इनकी क़रारगाह क़ो हमारी क़रारगाह और ठिकाना बना दे हम पर इनकी इमामत के ज़रिये हमारे लिये अपनी नेमत पूरी फ़रमा यहाँ तक की वो हमें तेरी जन्नत में ईन शहीदों के पास ले जायेंगे जो मुक़र्रिब-ए-ख़ास हैं, ऐ माबूद! मुहम्मद (स:अ:व:व) व आले मुहम्मद (अ:स) पर रहमत नाज़िल फार्म और इमाम मेहदी (अ:स) के नाना मुहम्मद (स:अ:व:व) पर रहम फार्म जो तेरे रसूल और अज़ीम सरदार हैं, और मेहदी (अ:स) के वालिद पर रहमत कर, जो छोटे सरदार हैं इनकी दादी सिद्दीक़ा-ए-कुबरा फ़ातिमा

(स:अ) बिन्ते मुहम्मद (स:अ:व:व) पर रहमत फ़रमा, ईन सब पर रहमत फार्म जिनको तुने इनके नेक बुज़ुर्गों में चुना और अल'क़ायेम (अ:स) पर रहमत फ़रमा, बेहतरीन कामिल पूरी हमेशा हमेशा बहुत सी बहुत ज़्यादा जो रहमत की हो तुने अपने बरगुज़ीदों में से किसी और मख्लूक़ में से अपने पसंद किये हुए पर और उस पर दरूद भेज, वो दरूद जिस की गिनती न हो सके जिस का समय खत्म न हो और कभी खत्म न होने वाले असीमित दरूद हों! ऐ माबूद इनके द्वारा हक़ क़ो क़ायेम फ़रमा, इनके हाथों बातिल क़ो मिटा दे, इनके वजूद से अपने दोस्तों क़ो इज़्ज़त दे, इनके ज़रिया अपने दुश्मनों क़ो ज़िल्लत दे, और ऐ माबूद हमें और इनको इकट्ठे कर दे ऐसा इकट्ठा जो की हमें इनके पहले बुज़ुर्गों तक पहुंचाए और हमें इनमे क़रार दे जिन्हों ने इनका दामन पकड़ा है हमें इनका जेरे साया रख इनके हकूक अदा करने में हमारी मदद फ़रमा, इनकी फमाबर्दारी में कोशान बना दे इनकी नाफ़रमानी से बचाए रख इनकी खुशनूदी से हम पर एहसान कर और हमें इनकी मुहब्बत अता फ़रमा इनकी रहमत इनकी दुआ और इनकी बरकत अता फ़रमा जिसके ज़रिया हम तेरे वासी'अ रहमत और तेरे यहाँ कामयाबी हासिल करें इनके ज़रिये हमारी नमाज़ क़बूल फ़रमा इनके वसीले से हमार गुनाह बख्श दे, इनके वास्ते से हमारी दुआ मंज़ूर फ़रमा और इनके ज़रिये से हमारी रोज़ियाँ फराख कर दे हमारी परेशानियां दूर फ़रमा इनके वसीले से हमारे हाजात क़ो पूरा फ़रमा, और तवज्जह कर हमारी तरफ़ अपनी ज़ात-ए-करीम के वास्ते से और क़बूल फ़रमा अपनी बारगाह में हमारी हाजरी हमारी तरफ़ नज़र कर मेहरबानी की नज़र की जिस से तेरी बारगाह में हमारी इज़्ज़त बढ़ जाए फिर अपने करम की वजह से वो नज़र हम से न हटा, हमें अल'क़ायेम (अ:स) के नाना के हौज़ से सैराब फ़रमा और इनकी आल (अ:स) पर ख़ुदा की रहमत हो, इनके जाम से इन्ही के हाथ से सिरो-सैराब कर, जिस में मज़ा आये और फिर प्यास न लगे, ऐ सब से ज़्यादा रहम करने वाले

अल्लाह हुम्मा सल्ले अला मुहम्मद व आले मुहम्मद

इसके बाद नमाज़'ए'ज़्यारत पढ़े जिस का ज़िक्र पहले हो चूका है और फिर जो दुआ चाहे मांगे इंशा'अल्लाह वो क़बूल होगी!

इस बहुमूल्य दुआ के संबंध में दुआए नुदबा का उल्लेख किया गया है जो की ज़ादुल-माद[1] में छठे इमाम (अ:स) द्वारा रेकार्ड किया गया है! इस बात पर ज़ोर दिया गया है की इस दुआ क़ो जुमा, ईद-उल-फितर, ईद-उल-कुर्बान और ईदे ग़दीर पर ज़रूर पढ़ना चाहिए!

मज़ार बेहार[2] में यह कहा गया है की, सय्यद इब्ने तावूस फ़रमाते हैं की : मुहम्मद बिन अली बिन अबी कुर्रा कहते हैं : हमने दुआए नुदबा, मुहम्मद बिन हुसैन बिन सुफियान बा'ज़ुफ्री की किताब से लिया है और यह याद रखना चाहिए की यह दुआ वक़्त के इमाम (अ:स) के लिये है और इसको चार ईदों पर ज़रूर पढ़ना चाहिए!

और, महान विद्वान, मुहदिस नूरी ने इस दुआ क़ो किताब मिस्बाह-उज़ ज़ायेर[3] के ताहि'यातुज़ ज़ायेर में उल्लेख किया है जो सय्यद इब्ने तावूस और मज़ार में मुहम्मद बिन मश-हदी जो लिया गया है मुहम्मद बिन अली बिन अबी क़ुर्र'अ से सो बा'ज़ुफारी पर अधिकृत है! इसी प्रकार नूरी (र:अ) ने भी मज़ार (पुरानी) में उल्लेख किया है और यह भी कहा है की इसको जुमा की शाम में भी पढ़ना चाहिए

---

[1] ज़ाद अल-माद पेज 491 -504

[2] बेहारुल अनवार, वौल 102 पेज 104 -110

[3] मिस्बाद अज़-ज़ायेर, पेज 230 -234